Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

अदृश्य कोरोना वायरस(कोविड–19) का आयुर्वेदीय उपचार

डॉ.बन्दना सिंह
असि.प्रोफे. व विभागाध्यक्षा
संस्कृत विभाग डी.एस.एन. पी.जी. कॉलेज,
उन्नाव, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

आज संपूर्ण विश्व कोविड–19 या कोरोना वायरस के प्रकोप से त्राहिमाम् कर रहा है। इस अदृश्य वायरस के संक्रमण से भारतदेश भी अछूता नहीं है। दिन–प्रतिदिन इसके संक्रमण व मृत्यु की संख्या बढ़ती जा रही है। प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिकों व चिकित्सकों द्वारा कोरोना वायरस से उपचार के निमित्त निरन्तर कार्य हो रहा है। लेकिन अभी तक विश्व के किसी देश को इस अदृश्य वायरस का इलाज नहीं मिल पाया है। इसके बढ़ते संक्रमण को रोकने के लिए सामाजिक दूरी को ही विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। इसीलिए भारत में भी लॉकडाउन के माध्यम से कोरोना संक्रमण को (विस्तृत रूप न धारण करें) रोकने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन इन सभी के मध्य हम अपने आयुर्वेद के माध्यम से कोरोना वायरस के संक्रमण को नियत्रित कर सकते है। कोरोना वायरस आयुर्वेद सिद्धान्तानुसार वात व कफ की विकृतिजन्य संक्रमण है, जिसके कारण जीवनीय रोग प्रतिरोधक क्षमता शिथिल हो जाती है। ऐसी स्थिति में कुछ विशेष आयुर्वेदीय औषधियों के मिश्रण को क्वाथ(काढ़ा) के रूप में सेवन करने से करोना जैसे भयावह वायरस से मुक्ति मिल सकती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध–पत्र में जिन आयुर्वेदीय उपायों को बताया गया है उसके माध्यम से कोरोना वायरस को नियन्त्रित करने के साथ ही उसका समूलोच्छेदन भी सम्भव है। इसके साथ ही हमारी भारतीय संस्कृति सभी के कल्याण के लिए सच्चे हृदय से कामना करती है–

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।''

मुख्य शब्द– कोरोना, वायरस, कोविड–19, आयुर्वेदीय, व्याधि, उपचार।

'आयुर्वेदयति बोधयति इति आयुर्वेदः' अर्थात् जो शास्त्र (विज्ञान) आयु (जीवन) का ज्ञान कराता है उसे आयुर्वेद कहते है। आयुर्वेदीय सिद्वान्तानुसार वात, पित्त व कफ त्रिदोषजन्य शारीरिक व्याधियों का सामान्यतः निरुपण शास्त्रों में प्राप्त होता है। परन्तु कतिपय देशकाल, जलवायु व आहार–विहार के व्यतिक्रम के साथ दुर्घटनाओं तथा प्रदूषणजन्य वातावरण से उत्पन व्याधियों को आगन्तुज व्याधियों के नाम से जाना जाता है। इसमें विष आदि का

अतिशयतापूर्ण स्वयं अथवा शत्रु के माध्यम से सेवन कराये जाने पर जो व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती है। इसी प्रकार जल में डूबने या डूबा देने से अग्नि में जलने या जला देने से व स्वयं आत्महत्या के रूप में फांसी लगा लेने या मारकर लटका देने से जो सहसा शारीरिक कष्ट उत्पन्न होता है उसे भी इसके अन्तर्गत समाविष्ट किया गया है।

आयुर्वेद के मतानुसार मृत्यु के 101 भेद माने गये है, जिसमें एक काल मृत्यु व 100 अकाल मृत्यु है। आगन्तुज व्याधियों को भी अकाल मृत्यु में सम्मिलित किया जाता है। अभी हाल में कतिपय वर्षों से विभिन्न ऋतुओं में रोगाणुओं के रूप में मानव शरीर संक्रमित हो रहा है। कभी उसका नाम डेंगू, चिकनगुनिया, स्वाइन फ्लू आदि होता रहा है। इसका भयावह संक्रमण जीवन के लिए अत्यन्त हानिकार सम्भव हो गया है। इसी श्रृंखला में सन् 2020 आरम्भ होने के पूर्व कोविड–19 व कोरोना नामक वायरस का बीजारोपण चीन जैसे विशालयकाय देश के वुहान नगर के लैब में किया गया। जिसका उद्देश्य विश्व की महाशक्तियों में अमेरिका आदि के समक्ष स्वयं को एकमात्र महाशक्ति के स्प में सुनिश्चित् करने का उद्देश्य रहा क्योंकि वुहान के अतिरिक्त चीन जैसे विशाल देश में कहीं अन्यत्र स्थान पर इसका विशेष प्रकोप नहीं रहा। आर्थिक, सामाजिक, भौतिक व वैज्ञानिक सभी क्षेत्रो में आगे आने की होड भी इस वायरस के पनपने का कारण हो सकता है। वैश्वीकरण के कारण दुनिया के बाजारों पर अपना वर्चस्व सिद्ध करने के लिए भी यह सम्भव है। करोनो वायरस जो कि एक वैश्विक महामारी घोषित की जा चुकी है विश्व स्वस्थ्य संगठन के द्वारा जिससे सर्वाधिक प्रभावित देशों में अमेरिका, इटली, फ्रांस,स्पेन आदि है। जहाँ की स्वास्थ्य सुविधा सर्वोत्कृष्ट मानी जाती है। इन सभी देशों की अपेक्षा हमारे देश भारत में कोरोना संक्रमण पर काफी नियत्रंण किया गया है। फिर भी अनेकानेक उपायों के बाद भी इसका प्रकोप दिन प्रतिदिन भयावह होता जा रहा है। लेकिन चीन में अन्य देशों की अपेक्षा मृतकों की संख्या लगभग नगण्य ही है।

आश्चर्य यह भी है कि चीन ने उसके निराकरण के लिए मास्क व अन्य चिकित्सीय सुविधा का निर्माण व वितरण की व्यवस्था भी अन्तार्राष्ट्रीय स्तर पर सुनिश्चित कर लिया था। जिसमें उसके द्वारा भेजे गये उपकरण व औषधियाँ यथायोग्य परीक्षणोपरान्त पूर्ण उपयुक्त प्रमाणित नहीं हुए। इस सन्दर्भ में विश्व स्वास्थ्य संगठन(W.H.O) की भूमिका भी संदिग्ध प्रतीत होती है। जैसा कि विश्व के विभिन्न देशों ने अपनी प्रतिक्रिया द्वारा सुस्पष्ट किया है। शनैः शनै यह संक्रमण अत्यन्त विकराल रूप में बढ़ता जा रहा है। विवश होकर विभिन्न सरकारे अपने यहाँ विशेषाज्ञा के रूप में लॉकडाउन करने के लिए विवश है क्योंकि इसका बचाव अभी तक एकमात्र सामाजिक दूरी है। इस लॉकडाउन से जनसामान्य की व्यक्तिगत क्षति के साथ देशों की आर्थिक स्थिति भी प्रभावित हो रही है। फलस्वरूप पर्याप्त प्रयास के उपरान्त भी समुचित निराकरण में विलंब हो रहा है।

आजतक संपूर्ण विश्व में लगभग पैंतालीस लाख लोगों के संक्रमित होने के साथ तीन लाख 70 हजार लोगो की मृत्यु भी हो चुकी है। इनमें एक राहत की खबर यह है कि जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी है ऐसे लोग पूर्णतः स्वस्थ होकर घर भी लौट रहे हैं। आज लगभग 2 महीने से जनसामान्य की गतिविधियाँ घर के अन्दर सीमित होने को विवश हो गयी है। जहाँ तक आयुर्वेदीय उपचार व्यवस्था का प्रश्न है इस सम्बन्ध में विभिन्न वनस्पतियों का

हवन के रूप में या यज्ञ के रूप में प्रयोग करने से रोगाणुओं का विनाश संभव है। साथ ही उनका मिश्रण कर क्वाथ (काढ़ा) के रूप में दिन में तीन–चार बार सेवन करने से नियंत्रण संभव है। चेचक के टीके के आविष्कारक डॉ. हैफकिन का कथन है–'घी जलाने से रोग के कीटाणु मर जाते है। आयुर्वेद का एक महत्वपूर्ण अंग धूम्र चिकित्सा था। सरभारी या दर्द होने पर किस प्रकार हवन से इलाज होता था–

श्वेता ज्योतिष्मती चैव हरितलं मनःशिला।।[1]
गन्धाश्चा गुरुपंत्रद्या धूमं मुर्धविरेचनम्।।2।चरक सूश्रुत संहिता5/26–27

अर्थात् अपराजिता, मालकांगनी हरताल, मैनसिल, अगर तथा तेज पात्र औषधियों को हवन करने से शिरो विरेचन होता है।

सामान्यतः कोरोना व्याधि के लक्षण ज्वर, श्वासनलीगत कफ का संचित होना जिससे श्वास में अवरोध उत्पन्न होता है जिसका मूल फुफ्फुस (लंग्स) है। ऐसी स्थिति में मूलतः आयुर्वेद सिद्धान्तानुसार वात व कफ की विकृति जन्य संक्रमण सुनिश्चित होती है। अतः जीवनीय रोग प्रतिरोधक क्षमता शिथिल हो जाती है। ऐसी स्थिति में कुछ आयुर्वेदीय औषधियों के उपयोग से इस कोरोना वायरस से वचाव सम्भव है।

कविड–19 (कोराना) का आयुर्वेदीय निदान–सर्वप्रथम गिलोय जिसे अमृता भी कहा जाता है, का 3–4 इंच मोटा तना, 5–7 पत्ती तुलसी तथा 5–7 पत्ती अडुसा की, मकोय का पंचांग(समान भाग में) वनपसा और अमलताल का गूदा इन सभी का समान भाग लेकर छोटे–छोटे टुकड़े कर कूच दें और तत्पश्चात् एक गिलास पानी में भिगो दें। दो से तीन घंटे भीगने के बाद औषधियों सहित जल को मंदाग्नि(धीमे आँच) में पकावें। 1/4 जल शेश रहने पर उसे ठंढ़ा कर मसल ले पुनश्च कपड़े से छान लें। इसे दिन में प्रत्येक 3–3 घंटे में गरम करके सेवन करें। अगले दिन इसी प्रकार नया काढ़ा बनकार सेवन करें। नियमित रूप से लगभग 40 दिन सेवन करने के पश्चात् निश्चितरूप से कोरोना जैसे भयावह रोग से मुक्ति मिल सकती है। इससे रोग प्रतिरोधक क्षमता के साथ ही कफ व वायु का शमन जिससे श्वासावरोध का उपशमन हो जाता है और ज्वर भी पूर्णतः समाप्त हो जाता है। इन्हीं वनस्पतियों का हवन सामग्री की भाँति देशी घी में मिलाकर अग्नि को समर्पित करने से वातावरण में संक्रमण को नियन्त्रित किया जा सकता है।

औषधियों का आयुर्वेदीय स्वरूप–

गिलोय– आयुर्वेद की अमृता जिसे गुडुची के नाम से भी जाना जाता है। गिलोय की पत्तियों और तनो से सत्व निकालकर इस्तेमाल में लाया जाता है। इसके विषय में 'गुडुच्यादिवर्ग' में लिखा है कि ''गुडति रक्षति इति गुडुची।'' यह रोगों से शरीर की रक्षा करती है। यह शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। गिलोय से डेंगू, स्वाइन,फ्लू व मलेरिया आदि ज्वरों के होने पर इसके चूर्ण को शहद में मिलाकर इस्तेमाल करने से ठीक हो जाता

है। यह शुगर को नियंत्रित करने, गठियाँ में दमा व खाँसी में बहुत लाभदायक औषधि है गिलोय एक संक्रमण रक्षक औषधि है। यह कोरोना वायरस के संक्रमण ासे बचाने में भी महत्वपूर्ण है। यह सम्पूर्ण भारतवर्ष में पायी जाती है। भावप्रकश निघष्टुकार के अनुसार–

''ततो येयु प्रदेशेषु कपिगात्रात् परिच्युताः।
पीयुषबिन्दवः पेतुस्तेभ्यो जाता गुडुचिका।।[3]

तुलसी– भारतीय संस्कृति और धर्म में तुलसी को उसके महान् गुणों के कारण ही सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है। आयुर्वेद में तुलसी को संजीवनी बूटी के रूप में माना जाता है। यह एक ऐसी रामबाण औषधि है जो सभी प्रकार की बीमारियों में काम आती है। जैसे स्मरण शक्ति, हृदय रोग, कफ,श्वास के रोग, खाँसी, जुकाम, दमा आदि में चमत्मकारी लाभ मिलता है। तुलसी एक प्रकार से सारे शरीर का शोधन करने वाली जीवन शक्ति संवर्धक औषधि है। महर्षि सुश्रुत तुलसी के गुणों का वर्णन करते हुए लिखते है–

कफानिल विषश्वासकास दौर्गन्धनाशनः।
पित्तकृतकफवातध्नः सुरसः समुदाहतः।।[4] सूत्र–46

अर्थात् तुलसी कफ वात, विष, विकार,श्वास, खाँसी और दुर्गन्ध नाशक है। पित्त को उत्पन्न करती है तथा कफ और वायु को विशेषरूप से नष्ट करती है।

अडूसा(वासक) यह एक अमृत के समान औषधि है। इसका उपयोग विभिन्न रोगों को दूर करने में किया जाता है। इसका उपयोग करने के बाद इसका असर जल्दी होता है। यह वातकारक स्वशोधक, हृदय को हितकारी, कडवी, कसैली और कफ, पित्त, रक्त, विकार,प्यास, श्वास, खाँसी, ज्वर, वमन, प्रमेह, तथा क्षय का नाश करने वाली वनौषधि है।

मकोय – संस्कृत में इसे काकमाची,काकहवा, वायसी आदि नाम से जाना जाता है। मकोय बहुत उत्तम औषधि है यह चिकना और थोड़ा गर्म प्रकृति का होता है। इसका प्रयोग सांस संम्बन्धि विकारो को दूर करने व वात, पित्त, कफ (त्रिदोष) से मुक्ति में अत्यन्त उपयोगी है। यह सर्दी जुकाम से पीडित रोगियों के नाक में जमें कफ का निकालसते। काम करता है। इसके पंचांग (जड़, तना, पत्ता, फूल, व फल) के काढ़े का सेवन खाँसी में अत्यन्त लाभ पहुँचाता है। यह प्रत्येक स्थान पर आसानी से मिल जाता है।

वनफ्सा – इसे हिन्दी में बाग बनोसा के नाम से जाना जाता है। वनफ्सा कटु, तिक्त, उष्ण, लघु, स्निग्ध, वातपित्तशामक होता है। यह शीत ज्वर, कास तथा श्वास में लाभप्रद है। इसका पंचांग जीवाणुरोधी कवकरोधी,

ज्वरहन, कासहर (खाँसी) कफनिसारक व अल्परक्तदाब से मुक्ति दिलाने वाला है। इसके पुष्प मृदुकारी तथा वेदनाशामक होते है।

''अमलताल''– को संस्कृत में व्याधिधात व नृपद्रुम कहते है। यह अनेक रोगों की दवा है, जैसे– बुखार, खाँसी, गठिया, दाद, पीलिया, पेटदर्द श्वास, कब्ज आदि।

इस प्रकार काविड–19 से बचाव के लिए जिन औषधियों को काढ़ा बनाने में प्रयुक्त किया जाता है। उन सभी का संक्षिप्त ज्ञान है। आज सम्पूर्ण विश्व कोविड–19 वायरस को कारण त्राहिमाम् कर रहा है। इन विकट परिस्थितियों में हम सभी को कोशिक यह करनी चाहिए की अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बेहतर रखें, और साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें जिससे कोरोना वायरस के प्रकोप से बचे रहें। साथ ही कुछ घरेलु सुझाव भी है। जिनको अपनाकर हम खुद को व अपने परिवार को संक्रमण से सुरक्षित रख सकते है।

1.कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए सबसे जरूरी है कि आप नियमित तौर पर गुनगुना पानी पिएँ।

2. रोग–प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए नियमित रूप से उचित मात्रा में आंवला, ऐलोवेरा, गिलोय, नीबू आदि का जूस पीना चाहिए। जलमे तुलसी रस की कुछ बूदे डालकर पीएं।

3. प्रतिदिन गर्म दूध में हल्दी मिलाकर पीने से भी रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होती है और तुलसी की पांच पत्तिया, 4कालिमिर्च, 3लौंग, एक चममच अदरक का रस शहद के साथ लेने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

4. यदि आप चाय पीने के शौकीन है तो नियमित रूप से 10 या 15 तुलसी के पत्ते, 5 से 7 कालीमिर्च थोड़ी दलचीनी और उचित मात्रा में अदरक डालकर बनाई गई चाय पीनी चाहिए। यह आपको संक्रमण से बचने में मदद करेगी।

5. इसके अलावा गुग्गुल, वचा, इलायची, तुलसी, लौंग, गाय का घी और खांड को किसी मिट्टी के पात्र में रखकर जलाएँ और उसके धुएँ को घर और आस–पास फैलने दें। इस प्रकार इन कुछ सरल उपायों से हम कोरोना जैसे महामारी के संक्रमण से सुरक्षित रह सकते है।

विश्व की जितनी भी चिकित्सा पद्धतियाँ है उनका नामकरण व्यक्ति देश अथवा इसी प्रकार अन्य नामों से जाना है। जबकि आयुर्वेद का नामकरण आयु+वेद अर्थात् आयुः का तात्पर्य गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त तक का समय तथा वेद का भाव उसे सुव्यवस्थित,शतायु के विभिन्न आहार–विहार की व्यवस्था का ज्ञान होता है। उसे आयुर्वेद कहा गया है। इसका सम्बन्ध मानव शरीर को नीरोग रखने, रोग हो जाने पर रोग से मुक्त करने अथवा उसका शमन करने तथा आयु बढ़ाने से है। चरक संहिता में भी इस प्रकार कहा गया है–

हिताहितं सुखं दुःखमापुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।[5] चरक संहिता1/4

इसी प्रकार वैश्विक महामारी का रूप धारण कर चुकी कविड–19 का उपचार आयुर्वेद के माध्यम से किया जा सकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उपरोक्त आयुर्वेदीय उपायों का प्रचार–प्रसार व उपयोग से वर्तमान में कोरोना वायरस को नियन्त्रित करने के साथ ही समूलोच्छेदन सम्भव है।

सन्दर्भ–

1. श्वेता ज्योतिष्मती चैव हरितलं मनश्विता।। चरक सुश्रुतसंहिता 5/26
2. गन्धाश्चा गुदपप्राद्या धूमं मुर्धविरचनम्।। चरक सुश्रुतसंहिता 5/27
3. ततो येयु प्रदेशेषु कपिगात्रात परिच्युताः।
   पीयुषबिन्दवः पेतुस्तेभ्यो जातागुडुचिका'' (भाव प्रकाश)
4. कफानिलविषश्वास कास दौगन्धनाशनः।
   पित्तकृतकफवातघ्नः सुरसः समुदहतः।। चरक सुश्रुतसंहिता 46
5. हिताहितं सुखं.....यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्चते।। चरकसंहिता 1/40